दो दरिया बीच एक जिमी, दो जिमी बीच दरिया एक।
यों आठ दरिया बीच आठ जिमी, गिन तरफ से इन विवेक।। ६१ ।।

दो सागरों के बीच एक जमीन है। इस तरह से दो जमीनों के बीच एक सागर है। इस तरह से आठ सागरों के बीच आठ जमीन हैं। गिनकर देखी जा सकती हैं।

दरियाव जिमी परे रांग के, फिरते न आवे पार।
देख जिमी या सागर, कहूं गिनती न पाइए सुमार।। ६२ ।।

सागर और बड़ी रांग की परे की जमीन जो घेरकर आई है, की शोभा बेशुमार है। जमीन को देखो या सागर को देखो। इनकी सिफत बेशुमार है। गिनती नहीं हो सकती।

और कही जो बिध रांगकी, कलस कंगूरे बीच आसमान।
द्वार द्वारी कही गिनती, ए क्यों होए सिफत बयान।। ६३ ।।

और रांग की हवेली की जो हकीकत बताई है, उनके कलश, कंगूरे आसमान को छूते दिखाई पड़ते हैं। दरवाजे, खिड़कियों की गिनती तो बताई है, परन्तु इन हवेलियों की सिफत कैसे बयान करें (हकीकत कैसे बताएं)?

॥ प्रकरण ॥ ४३ ॥ चौपाई ॥ २४५४ ॥

मोहोल मानिक पहाड़

साथजी देखो मोहोल मानिक, जो कहे द्वार बारे हजार।
सोभा सुन्दरता इनकी, ए न आवे बीच सुमार।। १ ।।

हे सुन्दरसाथजी! मानिक पहाड़ में मानिक महलों को देखो जिनके दरवाजे बारह हजार बताए हैं। इनकी शोभा और सुन्दरता बयान करने में नहीं आती।

एक देख्या मोहोल मानिक का, ताए बड़े द्वार बारे हजार।
हिसाब न छोटे द्वारों का, सोभा सिफत न आवे पार।। २ ।।

एक मानिक महल देखने पर बड़े दरवाजे बारह हजार दिखाई देते हैं। छोटे दरवाजों का तो पार ही नहीं है। इनकी शोभा और सिफत बेशुमार है।

ले जिमी से ऊपर मोहोल मानिक, कम ज्यादा कहूं नाहें।
सरभर सोभा सब इमारतें, जल बन हिंडोले मोहोलों माहें।। ३ ।।

जमीन से ऊपर मानिक महल तक सभी महलों की, जल की, वन की, हिंडोलों की शोभा एक समान है। कहीं कम-ज्यादा नहीं है।

कई नेहेरें कई चादरें, कई फल फूल बन सोभित।
ऊपर झरोखे सब बिध तालों, कहूं गिनती न सोभा सिफत।। ४ ।।

कई जगह नहरें और कई जगह चादरें (जल की मोटी धारा) गिरती हैं। कई जगह फल, फूल, वन शोभा देते हैं। ऊपर के तालाब झरोखों से देखने से बड़े सुन्दर दिखाई देते हैं।

Nijanand App

मानिक मोहोल रतन मय, झलकत जोत आकास।
नूर पूरन पूर भर्‌या, रूह खोल देख नैन प्रकास।।५ ।।

इस मानिक महल की ज्योति आकाश तक जगमगाती है। यह एक ही मानिक नग का है। हे रूहो! अपनी आत्मा की नजर से देखो तो यह शोभा से भरा दिखाई देगा।

मोहोल मध्य मानिक का, नूर पहाड़ मोहोल गिरदवाए।
बड़े बड़े जोड़े छोटे छोटे, बराबर जुगत सोभाए।।६ ।।

पहाड़ के मध्य में मानिक महल है जो चारों तरह घेरकर आया है। बीच में पहाड़ जैसा नूर का थंभ है। यहां बड़े-बड़े और छोटे-छोटे महल सब युक्ति से शोभित हैं।

चारों तरफों मोहोल बीच ताल, चारों तरफों हिंडोले।
एक हिंडोले माहें झूलें, हक हादी रूहें भेले।।७ ।।

महल के चारों तरफ आकाशी में ताल की शोभा है जिसके चारों तरफ हिंडोले लगे हैं। एक-एक हिंडोले में श्री राजश्यामाजी और बारह हजार सखियां मिलकर झूलती हैं।

चारों तरफों ऐसे ही झूलें, हक हादी रूहें खेलत।
अर्स अजीम के बीच में, मोहोल अम्बर जोत धरत।।८ ।।

चारों तरफ ऐसे ही झूले आए हैं जहां श्री राजजी, श्री श्यामाजी और रूहें खेलती हैं। परमधाम के बीच में इस महल की शोभा आकाश तक जाती है।

बड़े बड़े पहाड़ मोहोल फिरते, बड़े बड़े के संग।
छोटे छोटा जोत सों, करे नूर जोत सों जंग।।९ ।।

बड़े-बड़े महल चारों तरफ घेरकर आए हैं और बड़ों के साथ छोटे-छोटे मन्दिरों का तेज भी आसमान में टकराता है।

कई हजारों लाखों दिवालें, जंग करत आसमान।
कई सागर मोहोलों माहें, गिनती नाहीं मान।।१० ।।

कई हजारों, लाखों दीवारें हैं जिनका तेज आकाश तक टकराता है। इसी तरह से महलों के बीच सागर के समान बड़े-बड़े कुण्ड हैं जिनकी गिनती नहीं है।

ऊपर मोहोल तले मोहोल, बीच बीच मोहोल गिरदवाए।
इन बिध मोहोल भर्‌यो अम्बर, फेर बिध कही न जाए।।११ ।।

ऊपर, नीचे, बीच में, चारों तरफ महल ही महल हैं। इस तरह महल बेशुमार हैं। इनकी हकीकत कहने में नहीं आती।

पहाड़ थंभ जो पहाड़ थुनी, पहाड़ै मोहोल मंडान।
कई मोहोल मोहोलों मिले, कहूं जिमी न देखिए आसमान।।१२ ।।

पहाड़ के मध्य में जल स्तम्भ (थूनी) के समान हैं और महलों के ऊपर पहाड़ जैसी शोभा है। कई महल महलों से मिले हैं जिससे जमीन और आसमान दिखाई नहीं देते।

Nijanand App

चौड़े देखे चारों तरफों, ऊंचे लग आसमान।
ऐसे और मोहोल तो कहूं, जो कोई होवे इन समान।। १३ ।।

चारों तरफ से चौड़े महल आसमान तक गए हैं। इनके समान दूसरा कोई महल उपमा के लिए नहीं है।

अन्दर बाहेर किनार सब, देख सब ठौरों खूबी देत।
ए सोभा सांच सोई देखेगा, जाको हक नजर में लेत।। १४ ।।

यह मानिक पहाड़ अन्दर से, बाहर से तथा सभी किनारों से, सब ठिकानों से सुन्दर दिखाई देता है। यह सदा अखण्ड शोभा है। इसे वही देख सकता है जिस पर धनी की मेहर हो।

पेहेली फिरती दिवाल फेर देखिए, तिन बीच मोहोल अनेक।
जो जो खूबी देखिए, जानों एही नेक सों नेक।। १५ ।।

पहले चबूतरे पर घेरकर आई दीवार को देखो। इसके अन्दर बेशुमार महलों को देखो। इनकी खूबी देखने से लगता है कि यही सबसे अच्छी है।

एक हवेली चौरस, दूजा मोहोल गिरदवाए।
ए खूबी मोमिन देखसी, नजरों आवसी ताए।। १६ ।।

एक हवेली चौरस है तथा दूसरी गोल है। ऐसी हवेलियां घेरकर आई हैं। इस खूबी को मोमिन ही देख सकेंगे।

अर्स हौज दोऊ बीच में, मोहोल मानिक पुखराज।
जेता नजीक हौज के, तासों मोहोल मानिक रहे बिराज।। १७ ।।

रंग महल और हौज कौसर ताल दोनों पुखराज पहाड़ और मानिक पहाड़ के बीच में हैं। हौज कौसर तालाब रंग महल से जितना पास है उतना ही हौज कौसर के आगे मानिक पहाड़ शोभा देता है।

ए चारों हुए दोरी बन्ध, सामी अछर नूर सोभित।
ए हक हुकम बोलावत, इत और न पोहोंचे सिफत।। १८ ।।

पुखराज पहाड़, रंग महल, ताल तथा मानिक पहाड़ सब एक सीध में हैं। रंग महल के सामने अक्षर धाम शोभा देता है। यह श्री राजजी महाराज जी का हुकम कहलवा रहा है, इसलिए कह रही हूं। यहां और किसी की सिफत नहीं पहुंच सकती।

ए कह्या कौल थोड़े मिने, रूहें समझेंगी बोहोतात।
दिल मोमिन से ना निकसे, चुभ रेहेसी दिन रात।। १९ ।।

यह शब्द मैंने थोड़े में कहे हैं। रूहें इसे विस्तार में समझ लेंगी। यह मोमिनों के दिलों में दिन-रात चुभे रहेंगे। कभी निकलेंगे नहीं।

कहे बारे हजार मोहोल फिरते, कही हुकमें तिनकी बात।
तिन हर मोहोलों बीच बीच में, बारे बारे हजार मोहोलात।। २० ।।

मानिक पहाड़ के बारह हजार महल घूमकर आए हैं। उन हर महलों के बीच में बारह-बारह हजार मन्दिर हैं जिनकी हकीकत हुकम से ही बताई है।

Nijanand App

अटक रहे थे इतहीं, बीच आवने मोमिनों दिल।
इन अर्स रूहों वास्ते एता कह्या, विचार करें सब मिल।। २१ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मैं तो इसे देखकर ही अटक गई थी, परन्तु मोमिनों के वास्ते इतना बयान किया है। आगे सब मोमिन विचार करके सुख लेंगे।

जो मोमिन किए हकें बेसक, सो लेंगे दिल विचार।
अर्स दिल एही मोमिनों, तो ल्याए बीच सुमार।। २२ ।।

श्री राजजी महाराज ने मोमिनों के सब संशय मिटाये हैं। वह इसे दिल में विचार कर ग्रहण करेंगे। मोमिनों के दिल में श्री राजजी महाराज का अर्श है, इसलिए बेशुमार को शुमार में लाकर बताया है।

आगे आए मिली इत नदियां, चक्राव ज्यों पानी चलत।
तिन पीछे नदियां मोहोल बन की, जाए सागरों बीच मिलत।। २३ ।।

इसके आगे भंवर के समान घूमकर सब नदियां मिलती हैं। उसके बाद यह एक महानद वन की नहरों में जाकर सागरों में मिलता है।

क्यों कर कहूं मैं पौरियां, और क्यों कर कहूं झरोखे।
देख देख मैं देखिया, न आवे गिनती में ए।। २४ ।।

मानिक पहाड़ की सीढ़ियां झरोखे जो देखे हैं वह बेशुमार हैं। उनका वर्णन कैसे करें?

मैं गिरद कही चौरस कही, पर कई हर भांत हवेली।
जाके आवें ना मोहोल सुमार में, तो क्यों जाए गिनी पौरी।। २५ ।।

मैंने गोल और चौरस हवेली बताई है, परन्तु इन हवेलियों में बेशुमार महल हैं। बेशुमार मेहराबें, रास्ते और हर तरह की शोभा है जो कैसे गिनी जाए?

जब हक याद जो आवहीं, तब रूह देख्या चाहे नजर।
दिल अर्स मार्‌या इन घाव से, सो ए मुरदा सहे क्यों कर।। २६ ।।

रूह को जब श्री राजजी महाराज की याद आती है तभी वह महल को देखना चाहती है। ऐसे सुन्दर महलों की शोभा मोमिनों के दिल में घाव करती है। फिर यह संसार के मुरदार जीव कैसे सहन कर सकते हैं?

देखो महामत मोमिनों जागते, जो हक इलमें दिए जगाए।
करे सो बातें हक अर्स की, तूं पी इस्क तिनों पिलाए।। २७ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! अगर तुम हक इलम से जग गए हो, तो जागकर परमधाम को देखो और श्री राजजी महाराज के इश्क का रस स्वयं पिओ और दूसरों को पिलाओ।

।। प्रकरण ।। ४४ ।। चौपाई ।। २४८१ ।।

प्रकरण तथा चौपाइयों का सम्पूर्ण संकलन

।। प्रकरण ।। ४२४ ।। चौपाई ।। १३०३७ ।।

।। परिकरमा सम्पूर्ण ।।

Nijanand App